"एकादशमहारुद्र यात्रा"

बैशाख कृष्ण ~~चौदसी तिथि~~ त्रयोदशी के प्रदोष
के दिन एकादशरुद्र यात्रा।
प्रातः नित्यकर्म से निवृत्त होकर
पूजा की सामग्री
बिल्वपत्र, पुष्प, ऋतुफल, गङ्गा-
जल एवं भस्म, रुद्राक्ष का दाना,
दूबा, अक्षत, वस्त्र, धूप, नैवेद्य
इत्यादि पूजा की सामग्री साथ में लेकर
[illegible]
के बराबर पुण्य पड़ता है।
मंगल गान करते हुए चलें —
दुर्गाजी से उत्तर रथयात्रा ~~सिगरा~~
चौराहों से पश्चिम बगल के
शिवपुर में काशी में सब से
ऊँचा लाल मन्दिर है।

निरञ्जनाथ जी से दक्षिण दुर्गा जी के पश्चिमफाटकमें तिल पर्णेश्वर हैं। दुर्गा जीमें ~~की दर्शन करने के~~ ~~पश्चात~~ दर्शन-पूजा करके ~~क~~ संकल्प लेकर यात्रा ~~प्रारम्भ~~ आरम्भ करें। दाहिने पर्त से

१ तिल पर्णेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर बी०२७/२ में है मु०- दुर्गा कुण्ड]

तिल पर्णेश्वर के दर्शन पूजा करने वाले व्यक्ति को एक तिल के दाना के बराबर पुण्य बढ़ता है।

मंगल गान करते हुए चलें —

दुर्गाजी से उत्तर रथयात्रा [~~सिगरा~~ चौराहों से पश्चिम बगल के शिव पुरा में काशी में सब से ऊँचा लाल मन्दिर है।

2 त्रिपुरान्तकेश्वरायनमः [मन्दिर नम्बर डी०५६/६५ में है मु० शिवपुरा सिगरा]

त्रिपुरान्तकेश्वर का दर्शन-पूजा करने मात्र से शिवजी ~~के का अवश्य~~ की भक्ति प्राप्त होती है।

सिगरा ~~सोनम~~ से पूर्व राजा दरवाजा के पास में भारभूतेश्वर हैं।

3 भारभूतेश्वरायनमः [मं० सी०के० ५४/४४ मु० मच्छरहट्टा फाटक]

राजादरवाजा से उत्तर काशीपुरा मुहल्ले में बेतिया मन्दिर में अपोहेश्वर हैं।

4 अपोहेश्वरायनमः [~~मक~~ मन्दिर नम्बर के० ६३/५३ में है ~~मु~~ मु० काशीपुरा बेतिया शिवाला में।

काशी पुरा से उत्तर ईश्वर गङ्गी के पास जागे श्वर मठ में चिन्तामणी विनायक के बगल में विशाल शिव लिङ्ग है।

५ अगस्ती श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर के० ६६/४९, में है मु० नरहरीपुरा ईश्वर गङ्गी।

ईश्वरगङ्गी तीर्थ के दक्षीण पूर्व के कोने से पूर्व जाने वाली गली में उर्वसी श्वर हैं।

उर्वसी श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर जे० औसान गंज]

उर्वसी श्वर के दर्शन, पूजन करने वाले नर, नारी के, स्थूल पाप क्षीण होते हैं और दूसरे जन्म में सुन्दर शरीर पाता

विद्या की प्राप्ति होती है।
औसान गंज से दक्षिण खोवा
बाजार में ज्ञान विनायक के मन्दिर
में लाङ्गली श्वर हैं।

७ लाङ्गली श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
सी०के० ~~लाङ्गली~~ २८/४ मु०
खोवाबाजार चौक]

~~श्री~~ खोवा ~~बाजार~~ बजार से नेपाली
खपड़ा- सरस्वती फाटक होते हुए
कालिका गली चौमुहानी में बाँयें ~~~~
तरफ के देवालये में है।

८ मदाले श्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
डी०५/१३३ में है।

~~म~~ मदाले श्वर के दर्शन पूजा
उपासना करने वाले नरनारी

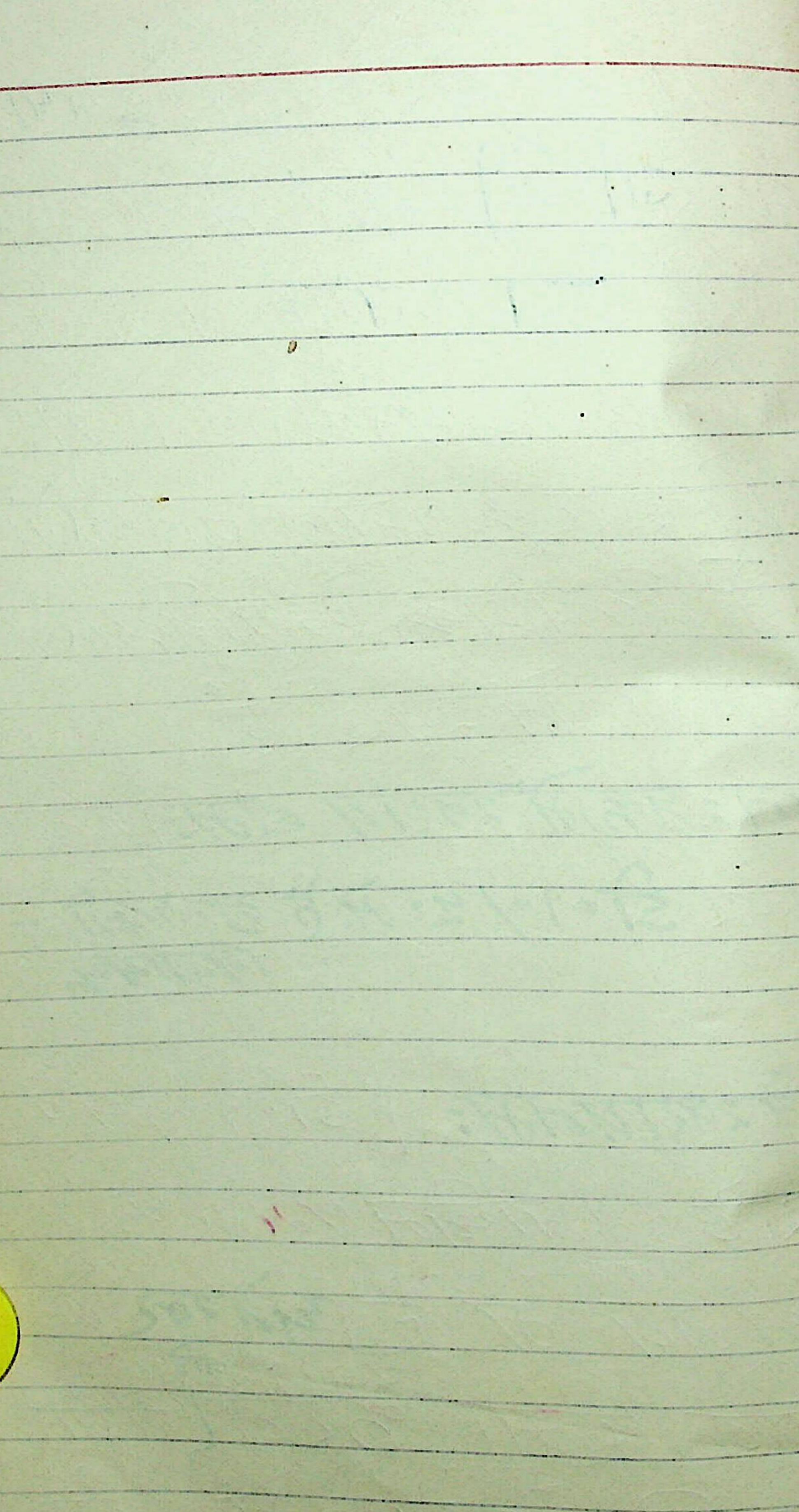


(२०)

यों को बरे स्वर्ग तथा शंकरजी की भक्ती प्राप्त होती है। कालिका गली साक्षी विनायक मुहल्ले में धनेश्वर के बगल में कलिप्रीये विनायक के मन्दिर में मनः प्रकामेश्वर हैं।

मनः प्रकामेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर डी॰ १०/५॰ में है मु॰ साक्षी विनायक

धनेश्वरायनमः [डी॰ १०/५॰ से सटे हुए पश्चिम बगल के शिवालय में है। धनेश्वर के दर्शन पूजा करने वाले व्यक्ती के घर में धन



धान्य से और परिवार
से घर सदा भरा
रहता है। धनतेरस के
दिन धनेश्वर के दर्शन
करने वाले व्यक्ति
के घर में लक्ष्मी का
निवास होता है तथा
धन की वृद्धि
होती है।]

साक्षी विनायक से उत्तर बगल में
प्रीतिकेश्वर हैं।

प्रीतिकेश्वराय नमः [मन्दिर
नम्बर डी० १०/८ में है
मु० साक्षी विनायक]

ढुण्ढिराज जी के पास द्वारविनाय
क के ~~क~~ सटे हुए उत्तर बगल मे
के शिवमन्दिर में नकुलेश्वर है।
नकुलेश्वराय नमः [मन्दिर नम्बर
सी० के० ३५/२६ मु० ~~३००~~
सावित्री फाटक]
नकुलेश्वर के दर्शन करने से
रूप, विद्या, भक्ति की
वृद्धि होती है।

अष्ट शिव लिङ्ग दर्शन यात्रा
करने से आठ प्रकार के मन,
वाणी, शरीर से जो पाप होते हैं
उन सभी ~~इस~~ पापों का प्रायश्चित होता है।

"काशी में षोडश विष्णु दर्शन पूजा यात्रा"

'काशी खण्ड अध्याय १०० श्लोक ९८ में
अ० ६१ श्लोक २०७ से २०९ में

अ० ९८ श्लोक ३१ में है। अ० ७५ श्लोक ६६
से ७० तक

विश्वनाथ नित्य दर्शन यात्रा करने के पश्चात्
दाहिने पर्त से यात्रा प्रारम्भ करें।

पूजा की सामग्री

गङ्गा जल, तुलसी दल, मालरवा
अक्षत, श्रीखण्ड चन्दन - माला - पुष्प, बिल्वपत्र,
ऋतुफल, फूल, पुष्प, धूप
दीप, वस्त्र, जल पात्र इत्यादि साथ
में लेकर महा विष्णु के दर्शन
पूजा करने के पश्चात संकल्प
लेकर यात्रा प्रारम्भ करें।

महाविष्णवे नमः [मन्दिर नम्बर डी० ७/१७ में है मु० अन्नपूर्णा ~~जी~~ गली]

महाविष्णु जी के दर्शन करने वाले मनुष्यों के घर में स्थिर लक्ष्मी, शिव, विष्णु जी की भक्ति प्राप्त होती है।

लक्ष्मीनारायण के नाम से प्रसिद्ध है।

२ ज्ञान माधवाय नमः [मन्दिर नम्बर ~~सी० के० डी० ७/१७ में मु० अन्नपूर्णा~~ सी० के० ३५/१९ में है

ज्ञानमाधव के दर्शन से ऐश्वर्य तथा ज्ञान की प्राप्ति होती है।

विश्वनाथ जी से दक्षिण शूलटंकेश्वर से ऊपर राम मन्दिर के पीछे

बाराही हेश्वर के बगल में है।

प्रयाग माधव विष्णवे नमः

[मन्दिर नम्बर डी० १७/१११ में है
मु० प्रयाग राज घाट]

प्रयाग माधव जी के दर्शन ~~पूजन~~ पूजा करने ~~वा~~ वाले व्यक्ति को ~~वैराग्य~~ भक्ति, ज्ञान वैराग्य की प्राप्ति होती है।

प्रयागराज घाट से उत्तर ~~गली~~ मीर ~~घाट~~
~~ग~~ घाट में ~~गङ्गा केशव है~~
आन्नपूर्ण
हनुमानजी की मूर्ति है से सटे हुए

दक्षिण बंगाल में है

४ श्वेतमाधव विष्णवेन्द्र
[मन्दिर नम्बर डी०३/६९
में है मु० मीरघाट]
श्वेत माधव के दर्शन
उपासन से घर में अन्न
जल भरा रहता है।

मीरघाट के उत्तर गंगा केशव
है।

(२७)

गङ्गा केशवाय नमः [मन्दिर नम्बर, डी० १/६६ – में है ललिताघाट

गङ्गा केशव के दर्शन, अर्चना करने वाले नरनारियों को विष्णु भगवान के और गङ्गा जी की अनन्य भक्ति प्राप्ति होती है।

ललिता घाट से उत्तर ~~सो~~ घाट के उपर वृहस्पती स्वर के बगल में गङ्गा जी के मन्दिर में

है। (२८)

वीरमाधव विष्णु वेनमः

[मन्दिर नम्बर ~~के~~ सी०के० ७/३०-में है ~~मु०~~ ~~[illegible]~~ ,

सिन्धियाघाट]

वीर माधव जी के दर्शन से सूर वीर तथा विष्णु भगवान के ~~[illegible]~~ भक्त पुत्र पौत्र उत्पन्न होते हैं।

सिन्धिया घाट से उत्तर बगल मे है।

[कृष्णेश्वराय नमः
कृष्णाय नमः [मन्दिर
नम्बर सी॰ के॰ ७/१६१ के सामने
है।
मु॰ शंकटा घाट]

जन्माष्टमी के दिन और
प्रत्येक अष्टमी के दिन कृष्णे-
श्वर के दर्शन करने वाले
नर, नारियों को कृष्ण जी
की ~~अक्ष~~ भक्ति प्राप्त होती है।

~~शंकटाघाट में~~ संकटा जी से उत्तर
सुत टोला, चौखम्भा होते
हुए लखनाने श्वर के मन्दिर में

६ कालमाधवायनमः

[मन्दिर, नम्बर के० ३८/४ — में है मु० चौखम्भा सट्टी

काल माधव के दर्शन उपासन करने वाले भक्तों को काल का भी भय नहीं रहता, उसकी ~~रक्षा की~~ विष्णु भगवान के गण (दूत) रक्षा करते है।

चौखम्भा सट्टी से पूर्व मंगला गौरी मोहल्ला में

गभस्ती श्वर से सटे हुए उत्तर बगल में भृगु केशव विष्णु पश्चिमाभि मुख हैं।

भृगुकेशवाय नमः [मन्दिर नम्बर ए.२४/३४ में है मु. मङ्गला गौरी]
भृगुकेशव जी के दर्शन करने वाले भक्तों को स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

मङ्गला गौरी से उत्तर

~~पञ्च~~

६ बिन्दुमाधव विष्णवे नमः
[मन्दिर - नम्बर के० २२/३३ में है
मु० पञ्चगङ्गा]

~~काशी~~ बिन्दु माधव विष्णु भगवान के दर्शन करने वाले नर-नारियों को लक्ष्मी, विष्णु और शंकर जी की भक्ति प्राप्त होती है। ~~[illegible]~~ और भक्तों को ~~[illegible]~~ ~~[illegible]~~ निर्विघ्न काशी वास ~~करते~~ ~~कर~~ आवास-भोजन आदि ~~[illegible]~~ की व्यवस्था ~~करते~~ होती है

ब्रह्माघाट के ऊपर राज मन्दिर मुहल्ले में हनुमान मन्दिर में पूर्वाभिमुख हैं।

१०- लक्ष्मी नृसिंह विष्णु [मन्दिर, नम्बर ~~के~~ के० २०/१५६- में है मु० राजमन्दिर

लक्ष्मी नृसिंह विष्णु के दर्शन करने वाले स्त्री पुरुषों के घर में विष्णु सहित लक्ष्मी जी निवास करती हैं।

पञ्चगङ्गा से उत्तर लाल
घाट के ~~ऊप~~ ऊपर
गौरी शंकर के मन्दिर में
११-गोपी गोविन्दाय नमः
[मन्दिर, नम्बर ए०४/२४-
में है मु० लाल घाट]
गोपी गोविन्द के दर्शन
करने मात्र से गोविन्द
की भक्ति प्राप्त होती है

(३५)

लाल घाट से उत्तर बद्री
नारायण घाट के ~~उत्तर~~
ऊपर बद्रीनारायण के
बगल में है। बद्रीनारायणाय
नमः।

72 नर नारायणौ
य नमः [मन्दिर, नम्बर
ए० १/७२ में है मु० बद्रीनारायण
घाट]

नर नारायण के दर्शन
पूजा करने वाला व्यक्ति
नर से नारायण हो जाता
है।

बद्रीनारायण घाट से उत्तर
त्रिलोचन ~~घाट के~~
श्वर के मन्दिर में त्रिलोचन
सभा में पूर्वाभिमुख है

१२ त्रिविक्रम विष्णवे नमः
[मन्दिर नम्बर ए० २/८० में है
मु० त्रिलोचनघाट]
त्रिविक्रम विष्णु के दर्शन
करने मात्र से तीन प्रकार
के पाप नष्ट हो जाते हैं।

त्रिलोचन से उत्तर प्रह्लाद
घाट के ऊपर प्रह्लादे
श्वर के मन्दिर में है।

१४- प्रह्लाद केशवाय नमः —
[मन्दिर नम्बर ए० १०/८० —
में है मु० प्रह्लाद घाट]

प्रह्लाद ~~स्व~~ केशव जी का
दर्शन जो स्त्री पुरुष करते हैं ~~करेंगे~~।
उनको धैर्य, स्थिरता, सहन
शक्ति प्राप्त होती है।

प्रह्लाद केशव से ऊपर
भक्त प्रह्लाद के मन्दिर में है।

१५-भक्त प्रह्लाद नृसिंहाय नमः
[मन्दिर नम्बर ए० १०/८२ —
— में है मु० प्रह्लादघाट

नृसिंह विष्णु के दर्शन, पूजा
करने वाले व्यक्ति को अपने
अपने इष्टदेव ~~अभीष्टदेव~~ की अनन्य भक्ति
प्राप्त होती है।

प्रहलाद से उत्तर चौखम्हा

गी में आदि केशव हैं।

क्षीर
~~खीर~~सागर आदि केशव
विष्णवे नमः

मन्दिर नम्बर ३७/५१ —

मु० आदि केशव वसन्त कालेज,

आदि केशव विष्णु भगवान के दर्शन करने मात्र से घर में मंगल मय कार्य होते हैं, और धन धान्य से घर ~~भरी~~ पूर्ण होता है।

भारत के आधुनिक कृषि
विज्ञानियों को सावधान
किया जाता है, एक सौ वर्ष
पूर्व जो भारत का कृषि विज्ञान
था उसी कृषि विज्ञान को विकसित
करें। और उसी कृषि विज्ञान
को विश्व में प्रचार करें,
तृतीय विश्व युद्ध के पश्चात
आधुनिक कृषि विज्ञान समाप्त
हो जाय गा। आधुनिक कृषि
विज्ञान की खाद आदि सामग्री
उपलब्ध नहीं होगी।
बिजुली, कल-कारखाना
याता यात सब बंद हो
जावेगा। यदि भारत धर्म की ओर
झुक जाय तो ८० अंश में

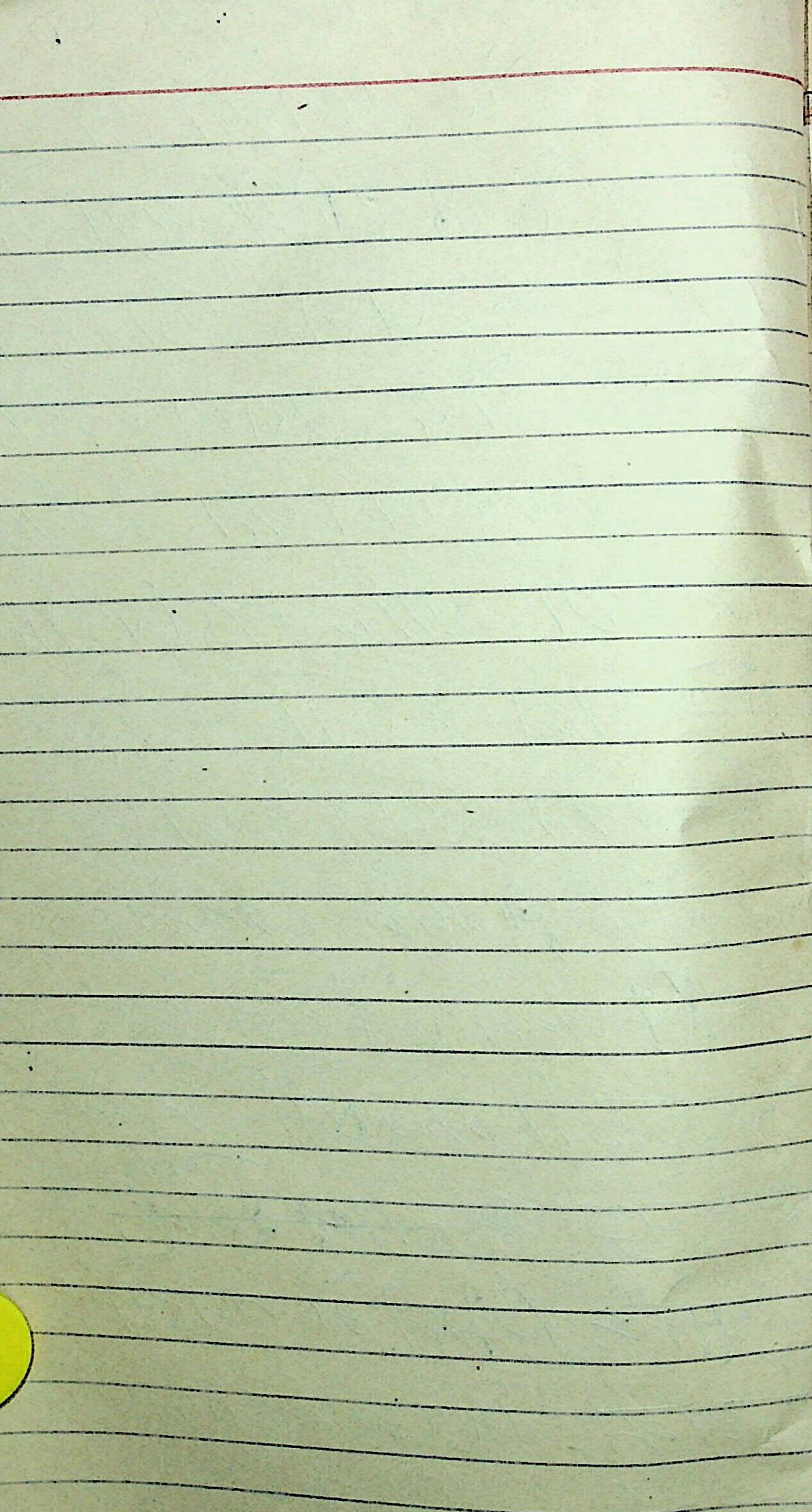
बच सकता है। ~~और भ~~ विश्व के किसानों से निवेदन करते हैं, आधे खेत में प्राचीन पद्धति से खेती करें। भारत में अब ~~धर्म निरपेक्षता की अवधि~~ समाप्त हो गई है ~~कि~~ प्रत्येक प्रान्त में धर्म एवं जाति को लेकर ~~हिंसा~~ भयंकर ~~हो रही है।~~ संघर्ष हो रहा है।

जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हो कर अपने बालकों को वेद, व्याकरण, ग्रहशान्ति, दुर्गा सप्त शती, रुद्री नहीं पढाता है। ~~उस~~ उन के ~~घर में~~ ~~बालक~~ पुत्र पौत्र नालायक हो जाते हैं।

~~घर में~~

स्त्री, ग्रहशांति हि-
दुर्गा सप्त शती आदि उपा
सना के लिये पढना जरुरी
है। क्योंकि उपासना करने
वाले व्यक्ति के घर में
धन, दुख, शांति स्वतः
आजाती है। उपासना
करने वाला व्यक्ति विश्व
का कल्याण कर सकता है।
जो ब्राह्मण संध्या वन्दन
नहीं करता उस-
को यज्ञ में वरणी नहीं
करनी चाहिए।

वेद और पुराणों में
लिखा है कि कलियुग में
सामाजिक यज्ञ, कीर्तन,
तथा वेद, पुराण, उपनि-
षद्, एवं श्रीमद्भागवत, गीता,
रामायण आदि के विशाल
संमेलन करनी चाहिए।
जिनको अपने धर्म का ज्ञान
नहीं है, जो अपने स्वकर्म को
नहीं जानते हैं। ऐसे अनपढ़
अज्ञानी मनुष्यों के लिये
सत्सङ्ग आवश्यक है,
जिनके जीवन में तपस्वी,
साधक, सिद्ध, सन्त तथा विद्वानों
का दर्शन नहीं किया है। वह



व्यक्ति कठोर से कठोर
हृदय वाला हो तो वह भी
यज्ञ, कीर्तन, संमेलनों
में जाकर दर्शन करते हैं
उसका मन पिघल जाता है
सत्सङ्ग में किसी न किसी वेश
में सिद्ध सन्त, महात्मा,
पितर, देवता सब आते हैं
उनको दर्शन होते हैं
वह गुमराह व्यक्ति अपने
धर्म के अनुसार मुख्य
धारा में सम्मिलित हो जाता है
उस दिन से उपासना
करना प्रारम्भ कर देता है।
वह दृश्य देखते ही

उसमें जन्म-जन्मान्तर के
धार्मिक संस्कार जाग्रत ~~जागृत~~
होते हैं। वह स्त्री, पुरुष
इसी जीवन में धर्म अर्थ
एवं काम, मोक्ष (चारों पदार्थों) प्राप्त कर
लेता ~~सकता~~ है।।१२।।

प्रत्येक मनुष्य को वर्णाश्रम ~~वर्ण~~
~~आश्रम~~ के अनुसार चलना
चाहिए। ~~वर्ण-आश्रम~~
अपौरुषेय वेद ने कहा है
कि वर्ण, आश्रम प्रकृति के
अनुसार बना है। प्रकृति को जैसे—
कोई भी मनुष्य नष्ट नहीं कर
सकता है। जो व्यक्ति नष्ट करने
जाता ~~सकता~~ है वह स्वयं समाप्त हो जाता
है।

काशी की विशेषता महत्ता
तो यह है कि काशी में
सायं 11 बजे तक
सभी प्राणियों को भोजन
स्वतः मिलता है।
स्कन्द पुराण में लिखा
है, सभी प्राणियों के भोजन
करने के पश्चात विश्व
नाथ जी भोजन
करते हैं। और काशी
में कभी भी अकाल
नहीं पड़ता तथा
कोई भी जीव
भूखा नहीं रहता है।
कोई कोई साधक-



(५७)

हठ भी करते है मैं

भवानी-अन्न पूर्णा

जबतक भोजन स्वयं

आकर नहीं करायेंगी तब

तक मैं भोजन नहीं

करूँगा' ऐसा ~~करूगूं~~ । कहते है । स

भवानी अन्नपूर्णा ~~पूस~~ रात्रि ११ बजे से १२ बजे

के अन्दर किसी भेषमे

भोजन लाकर देती है ।

एक दृष्टान्त से समझ

~~एक ब्राह्मण नेपाल काठमाण्ड~~

एक शिवानन्द नाम के स्वामीजी काठमाण्डू

पशुपती नाथ मे गस्थली

से सन् १९५६ ~~१६ सौ ५६~~ मे काशी

में तिल कण्टेश्वर के बगल

~~मे~~ के बरामदे मे रहते थे ~~रहते सोम~~

~~रहते~~ थे प्रात: विश्वनाथ

की नित्य यात्रा करने
के पश्चात यहीं आकर
रहते योगिकाल संध्या
करते थे। कहते थे जब
तक भवानी भोजन
नहीं करायेंगी तब
तक मैं और का दिया हुआ
भोजन नहीं करूँगा।
दूसरे दिन रात्रि ११ बजे
सात वर्ष की कन्या के रूप
में एक थाली में माल-
पुवा, खीर और विभिन्न
प्रकार की मिठाई लेकर
कान के पास जाकर
बोली-गुरुजी उठिये।

करिये।
भोजन ~~करीये~~ ~~सम्भू~~
~~स्वामीजी मुंह~~
~~भोग~~ ~~उपाध्याये~~
~~सोते~~ ~~कर~~ स्वामी
जी कम्बल से मुंह
तोप कर सो रहे थे।
सोते हुए बोले- मैं तो
भवानी जी का दिया
हुआ भोजन ~~करूंगा~~ करूंगा।
'आप उठिये, ~~उठीये~~ भोजन
करिये, मैं भवानी
अन्नपूर्णा हूं।' स्वामीजी
ने मुंह खोलकर ~~दिखे~~ देखा सातवर्ष
की सुन्दर कन्या, दोनों हाथों से
थाली ~~पकड़ी हुई थी~~ हुए
~~थाल को~~ भोजन लेकर खड़ी है
स्वामी जी बोले- मुझे साक्षात्
दर्शन दो तब भोजन
~~करूं~~ करूंगा।

भोजन की थाली को स्वामी
जी के आगे रख कर भवानी
जी ने साक्षात दर्शन देकर
अन्तर्ध्यान हो गई। ~~स्वामी~~
जी ने विरजा श्री भवती जी का दिया
हुआ भोजन करते ही
स्वामी जी को ब्रह्मात्मा साक्षात्कार हो गया।
उस दिन से स्वामी जी ने
भोजन करना छोड़ दिया।
केवल प्रणव के जप करते
थे। उपनिषद ब्रह्म
सूत्र का पाठ करते थे। ध्यान
धारणा समाधि में स्थित
रहते थे। [illegible] वर्ष के अवस्था
में भवानी जी का दर्शन हुआ
था। एक सौ ~~[illegible]~~

20 वर्ष के उमर में
ब्रह्मलीन होगये ।

काशी की महिमा

तीनो ही लोक से न्यारी त्रिशूल की
नोक पै शंभु सजाये है काशी।
भागीरथी अघ नाशती भेद है,
बिम्ब निहारें सदा अविनाशी॥
देवन मे जहाँ लगी,
नभ यान चढ़े निरखें सुख राशी।
धन्य है जो निसिवासर सेवते,
देवता तुल्य यहाँ के निवासी॥
काशी सदा राजधानी थी धर्म की,
मानवता नही फूली समाती।
ज्ञान की ज्योति मिलि जग को,
तप पूत मे ऐसी जलाई है बाती॥
केते यहाँ मठ पीठ बने,
जन रक्षित हैं जहाँ धर्म की थाती।
काशी में क्या महिमा कहिए,
गुण गाती है वाणी कभी न अघाती।

—o o—

मानसोपचारैः संपूज्य ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि।
वायत्मकं धूपं समर्पयामि।
रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि। मन्त्रं जपेत्।

गङ्गा में - अस्थि प्रक्षेप

दश मध्यामान्तरे यस्य गंगायामस्थि मज्जति।
तावत् स्वर्गे वसेत् प्रेतो, यावत्त्रास्थि तिष्ठति॥
(गरुड़ महापुराण)

जिस मृत व्यक्ति की (अस्थि हड्डी मृत तिथि से १० दिनं के भीतर (काशी) गङ्गा में डाल दी जाय, वह स्वर्ग में तब तक निवास करता है जब तक गंगा में उस

हड्डी रहती है।

स्कन्द पुराण में लिखा है जिस शव (मृतक) का काशी में दाहय संस्कार होता है उस व्यक्ति का पुनर्जन्म नहीं होता और मृतक व्यक्ति की अस्थि बाहर से लाकर (काशी) में गङ्गा जी में छोड़ी जाती है वह मृतक मनुष्य स्वर्ग में वास करता है। काशी में यदि मृतक का दर्शन हो जाय तो "विश्वनाथाय नमः" कहना चाहिए। चूँकि वह मृतक मनुष्य मुक्त हो गया काशी में शव का दर्शन होते ही शुभ और मङ्गलमय माना जाता है इस लिए उत्सव मनाते हुए बाजा बजाते हुए शव को श्मशान ले जाते हैं।

(५३

शिव पूजा का फल

जल के चढ़ाये यम लोक से उबार लेत,

चन्दन के चढ़ाये चक्रवर्ती कर देत है।

चावल के चढ़ाये लोक चौदहों बकसि देत,

दीप के दिखाए सातों द्वीप दई देत हैं॥

भाँग और धतूरे के चढ़ाये निज पुरी देत,

बेल के चढ़ाए सदा संग करि लेत हैं॥

हर हर कहते हर हरत कलेश सदा

गाल के बजाये तो निहाल करि देत हैं॥

श्रीः (५८)

श्रीराम चरितमानस के
बालकाण्ड के 106 दोहा के पहले

" विश्वनाथ मम नाथ पुरारी-
त्रिभुवन महिमा विदित तुम्हारी"

बालकाण्ड के 118 वें दोहा के तुरन्त बाद
की चौपाई (पहली)

"काशी मरत जन्तु अवलोकी,
जासु नाम बल करहुँ विसोकी"।

"आकर चार जीव जग अहहीं,
काशी मरत परम पद लहहीं"।
(बालकाण्ड के 45 वें दोहा के
बाद।

" ~~मुक्ति जन्म महि~~ ~~जान~~ ~~खानि~~

मुक्ति जन्म महि जानि ज्ञान खानि अघ-
- हानिकर"
जहँ बस शंभु भवानि सो काशी सेइय कस न"
(राम चरित मानस)

सेइय सहित सनेह देह भरि।
काम धेनु कलि काशी।।
(विनय पत्रिका)
काशी मरत जन्तु अवलोकी।
जासु नाम जपि भयउ विशोकी।।

जासु नाम बल शंकर काशी।
देत सबहिं सम गति अविनाशी ॥
(तुलसीकृत रामायण)

अधिभूत बेदन विषम होत भूतनाथ,
तुलसी विकल पाहि पचत कुपीर॥
मारिये तो अनायास काशीवास खास फल,
ज्याइये तो कृपा करि निरुजशरीर॥

जासु नाम बल शंकर काशी ।
देत सबहि सम गति अविनाशी ॥
राम चरित मानस)

आधि भूत वेदन विषम होत भूतनाथ,
तुलसी विकल पाहि पचत कुपीर हौं ॥
मारिये तो अनायास काशीवास खास फल,
ज्याइये तो कृपा करि निरुज शरीर हौं ॥

गौरीनाथ भोलानाथ भवत भवानी नाथ,
विश्वनाथ पुर फिरि आनि कलि काल की ।
शंकर से नर गिरजा सी नारी काशी वासी,
वेद कही सही शशि शेखर कृपाल की ॥

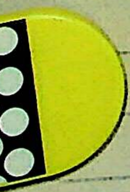
— ० —

महा मंत्र ~~जोई~~ जेहि जपत महेसू । काशी मुक्ति हेतु उपदेसू
(१८वा दोहा के बाद बालकाण्ड)

"आसुतोष तुम ~~औ~~ अवढर दानी,
आरति हरहु दीन जनु जानी ॥"
(४३वें दोहा के अन्तिम चौपाई)
(अयोध्या कांड)

[जहँ बस संभु भवानि सो कासी सेइअ कस न]
(किष्किन्धा काण्ड के २ श्लोक के तुरन्त बाद)

धन्य धन्य मैं धन्य पुरारी,
सुनेउ राम गुन भव भय हारी ॥
(उत्तरकाण्ड में ५२ दोहे के पहले)



~~श्री हरिः~~ (५६)

~~श्रावण मास शंकर जी का माना जाता है। उसमे भी~~
श्रावण कृष्ण पक्ष त्रयोदशी प्रदोष व्रत के दिन
सायं शंकर जी का पूजन कर रहे थे, तभी
आप की याद आयी।
यह विश्वनाथ जी की असीम कृपा ही
है।
आपके परिवार में सद्बुद्धि, सभी को ब्रह्म विद्या
प्राप्त हो। घर में स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति हो।
सभी आरोग्य रहें, और सभी को सुख शान्ति
प्राप्त हो। अपने-अपने ईष्ट देव का स्मरण करते हुए
गृह, व्यापार एवं समस्त कार्यों को करो। यथा
शक्ति दान करो। ~~यह~~ इहलोक व परलोक दोनों
~~लोकों~~ को सुधारो।
कभी-कभी विचार करो, मैं कौन हूँ, कहाँ से
आया हूँ, मुझे कहाँ जाना है। हम लोग ~~तीर्थ~~ तीर्थ
यात्रा करने जाते हैं। द्रव्य (रुपया) वस्तु (समान)
को लेकर जाते हैं। सोचो विचारो आगे
बड़े लम्बे सफर के लिए आज से तैयारी
करो। भूत की चिन्ता न करो, भविष्य की
इच्छा न रखो, वर्तमान में भगवान का
स्मरण करते हुये आनन्द से रहो,
घर में रहकर तपोमय जीवन व्यतीत
करो, यही मेरा आशिर्वाद है।

"काशी यात्रा प्रकाश" ~~हस्तलीपी के पुस्तक~~ के पृष्ठ संख्या १५७

श्री शिव प्रसाद पाण्डेयजी लिखते हैं कि

~~सताब्दी~~ शताब्दी में काशी का राजा विजय तुङ्ग नामक

हुआ। श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन प्रातः भयङ्कर

भूकम्प आया। विश्वनाथ जी का मन्दिर और उसकी

दिवाल गिर गयी थी, सनातन धर्म के मानने वालें

और बौद्ध धर्म को मानने वालों में विवाद

हो गया। राजा ने बौद्ध ~~धर्मीयों ने~~ धर्मियों का पक्ष लिया।

अदालत में मुकदमा चलने लगा। विजय तुङ्ग ने

१० वर्ष राज्य किया। विजय तुङ्ग ~~के बाद~~ के

बाद रणतुङ्ग राजा हुआ, उस समय विश्वनाथ

जी का मन्दिर बहुत विशाल एवं चौड़ा था। जैसे इस

समय मद्रास में रामेश्वर का मन्दिर है। मन्दिर

के बाहर ~~के~~ तीन घेरे थे, विशाल चार फाटक

थे। फाटक के चारो कोणों में विष्णु,

सूर्य, गणेश जी तथा देवीजी का मन्दिर
था। दूसरे फाटक के अन्दर चारों कोने में
भैरव, दण्डपाणि, वीरभद्र, पार्वती जी का
मन्दिर था। तीसरे फाटक के अन्दर
चारों कोने में पार्वतेश्वर, देवदासेश्वर,
कालराजेश्वर, स्कन्देश्वर (कार्तिकेश्वर)
काशी के विश्वनाथ जी का मन्दिर उस
समय इसी प्रकार का था। ज्ञानवापी से
पश्चिम में भवानीश्वर, पाँच फाटक में उत्तर में
चौक कचौड़ीगली तक था। पूरब में नीलकण्ठेश्वर
(नीलकण्ठ मुहल्ला तक था। दक्षिण में
शुक्रेश्वर (कालिका गली तक था। वेद में स्कन्द
पुराण, पद्म पुराण, मत्स्य पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण
में एवं उपनिषद में भी इसी सीमा का
उल्लेख है।
अन्दर विश्वनाथ जी मन्दिर को कहा है।

(विश्व)

मनुस्मृति
"तृतीय युद्ध के पश्चात ~~मनुस्मृति~~ के अनुसार पुनः राज परम्परा भारत में चले गी।

साधु तपस्या में लग जावेंगे।

होगी ~~वैश्य~~ वंदन शिव जी की उपासना आराधना करेंगे।

विश्व कल्याण के लिये तीन तीन किलो मिटर के अन्दर अखण्ड कीर्तन कराना चाहिये ~~क्योंकि~~ क्योंकि जहाँ कीर्तन होता है, वहाँ कीर्तन से मनुष्यों की बुद्धि शुद्ध हो जाती है, अन्तः करण पवित्र होता है।

उस कीर्तन स्थल के चारों तरफ ६ किलो मिटर के अन्दर समय पर वर्षा होती है

गुरुजी सूर्य - चन्द्र ग्रहण में क्या साधना करनी चाहिये ?! उत्तर - नारायणजी आपने मानव मात्र के कल्याण के लिये प्रश्न किया । आप जहाँ कहीं भी रहें जल्दी से ~~जल~~ पानी की ~~व्यवस्था~~ व्यवस्था जहाँ हो, तीर्थ, नदी, गङ्गा जी में जहाँ सुविधा हो, ग्रहण लगते ही स्नान करके (यदि काशी में उत्तर वाहिनी गङ्गा प्राप्त हो जावे तो दश हजार गुना अधिक फल प्राप्त होता है ॥ जिस मन्त्र में आप को श्रद्धा और विश्वास हो उसी मन्त्र का ग्रहण लगते ही स्नान करके, ~~अ~~ ~~कुछ~~ हो सके तो गाय के गोबर से लिपी ~~हुई~~ हुई शुद्ध जमीन में आसन बिछाकर ~~और~~ ग्रहण में दीर्घ उच्चारण करते

हुए शुद्ध जप करें। पाँचवार
ग्रहण में हवन करें।
इस प्रकार जप करने से एक
पुरश्चरण पूर्ण होता है। इस
विधान से जप हवन करने
वाले को व्यक्ति का मन्त्र स्वयं सिद्ध हो
जाता है। उस मन्त्र द्वारा लाखों
नर, नारियों का कल्याण कर सकते
ऐसे लोग
आज भी विश्व में मन्त्र द्वारा दीन
दुखियों का दुःख दूर करते हैं
ऐसे महात्मा आज भी
काशी में अनेक जगह संकट
कष्ट व रोग दूर करते हैं।
अस्सी में अनंत पीठ ज्ञान मठ के
(स्वामी)
महन्त राम स्वरूप आश्रम हैं।

"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुः विद्या यशोबलम्"
मनुस्मृति -
भावार्थ - अपने से बड़े माता-पिता-चाचा, बड़े भाई, वृद्ध आदि के चरण स्पर्श करने का फल और ब्राह्मण साधु, संत, संन्यासीयों को हाथ जोड़कर प्रणाम करनेवालें नर नारियों को विद्या, यश और बल की प्राप्ति होती हैं और आयु बढ़ती है। इतना ही नहीं, जीवन में धन, सुख, शान्ति भी प्राप्त होती है। बृहदारण्यक उपनिषद्, स्कन्दपुराण तथा मनु स्मृति में कहा गया है कि प्रणाम करने वालें व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम, एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मकान नम्बर पता आदि लिखना जो शेष रह गया है वह दूसरे संस्करण में लिखा जायेगा। काशीदर्शन दूसरा संस्करण में प्रत्येक मन्दिर के दर्शन पूजा का फल इतिहास मकान नम्बर और उनके प्रसिद्ध संत एवं काशी के तीर्थ आदि [illegible] से [illegible] किया जायेगा॥

जिह्वाग्रे वर्तते यस्य काशीत्यक्षर युग्मकम्।
न तस्य गर्भवासः स्यात क्वचिदेव सुमेधसः।।
यो मन्त्रं जपति प्रातः काशी वर्ण द्वयात्मकम्।
स तु लोक द्वयं जित्वा लोकातीतं व्रजेत्पदम्।।
वस्तु कोटी गुणं पुण्यं, काश्यां वासयितु ध्रुवम्।
आत्मानं तारयेद्वत्सा, स्त्रौ द्वौ वासितानतः।

<u>भावार्थः</u>- काशी में स्वंयं वास करने वाले, काशीवास करने वाले को (करोड़) कोटि गुणा पुण्य अधिक होता है। क्योंकि काशी वास करने वाले तो केवल अपने को ही तारता है पर वासयीता अपने को तथा जिसे काशी वास कराता है उसे दोनों ही का उद्धार कर देता है।

निम्नगानाँ यथा गङ्गा देवानामच्युतो यथा ।

वैष्णवानाँ यथा शम्भुः पुराणानामिदं तथा,

क्षेत्राणाँ चैव सर्वेषाँ यथा काशीह्यनुत्तमा ।

श्रीमद् भागवद् द्वादश स्कन्ध

जैसे-नदियों में गङ्गा जी, देवताओं में विष्णु भगवान हैं,

और वैष्णवों में श्री शंकर जी सर्वश्रेष्ठ हैं

वैसे ही पुराणों में श्रीमद् भागवत है ।

ऋषियों में शौनकादि हैं। जैसे सम्पूर्ण

तीर्थों में काशी सर्व श्रेष्ठ है ।

ब्रह्मज्ञानं तदेवा हैं काशीसंस्थितिभागिनाम् ।
दिशामि तारकं प्रान्ते मुच्यन्ते ते तु तत्क्षणात् ।। (५० (७).

-काशीखण्ड-1 ~~16/32~~ अ. 11६ श्लोक

अर्थ- विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं स्वभावत: पंचेन्द्रिय मनुष्यों को ब्रह्मज्ञान का उपदेश ~~करता~~ हूं । ~~अतएव कर्म~~ कहाँ हो सकता है, इसी कारण से मैं काशी में अन्त समय में ब्रह्मज्ञान का उपदेश करता हूं । अतएव काशीवासिजन अन्त समय उसी ब्रह्मज्ञान रूप तारक मन्त्र के उपदेश से उसी क्षण मुक्त हो जाते हैं, और सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि काशी में मरने वाला कैसा भी पापी, दुराचारी, चरित्रहीन, चाण्डाल, क्यों न हो और चाहे पुण्यात्मा हो, सबको भगवान विश्वनाथ जी एक ही प्रकार की मुक्ति देते हैं ।

यत्तच्चिदानन्दमनन्तमाद्यं यदावयोर्नित्यमभिन्नरूपम् ।
इदं समस्तोपनिषत्सु भवतीर्जानीहि तेजस्तदहोविमुक्तम् ।। (५८)

-सनत्कुमार संहिता-7

अर्थ- श्री शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे प्रियेसी जो शिव कल्याण रूप आनन्दमय, अनन्त, सब के आदि और उपनिषदों से जानने योग्य है और हम तुम दोनों का नित्य और अभिन्न रूप जो तेज है वही अविमुक्त (काशी) है ऐसा जानों ।

पक्षी, मृग आदि जीव मात्र जो (काशी) अविमुक्त ... (मरते) करते हैं । वे मरने वाले सभी प्राणी मात्र मस्तक में अर्धचन्द्रधारी और ललाट में नेत्र और वृष ध्वज बनकर सब शिव रूप हो जाते हैं ।

अतएव यह निश्चय है कि काशी में सबको मुक्ति मिलती है ।



कीटाः पिपीलिकाश्चैव ये चान्ये मृगपक्षिणः ।

कालेन निधनं प्राप्ता अविमुक्ते भृगुप्रिये ।।

चन्द्रार्द्धमौलिनः सर्वे ललाटाक्षा वृषध्वजाः ।

शिवे मम पुरे देवि जायन्ते नात्र संशयः ।।

– मत्स्य पुराण

अर्थ- ~~ब्राह्मण क्षत्रिय, शूद्र वर्ण संकर (दोगला) स्त्री, म्लेच्छ, संकीर्ण हिन्दू और बौद्ध~~
~~ये सभी~~ पाप योनिचाण्डाल आदि प्राणी मात्र और सभी कीट, पतंग, चींटी,
पक्षी, मृग आदि जीव मात्र जो (काशी) अविमुक्त क्षेत्र में काल के बस देह का त्याग
(मरते) करते हैं। वे ~~उन~~ मरने वाले सभी प्राणी मात्र ~~के~~ मस्तक में अर्धचन्द्रधारी और
ललाट में नेत्र और वृष ध्वज बनकर सब शिव रूप हो जाते हैं।

अतएव यह निश्चय है कि काशी में सबको मुक्ति मिलती है।

विश्वेश्वरो यत्र न तत्रचित्रं धर्मार्थकामामृतरूपरूपः ।
स्वरूपरूपः हि विश्वरूपस्तस्मान्न काशीसदृशी त्रिलोकी ।।

– काशीखण्ड 31/3/98.

अर्थ- विश्वनाथ (काशी में) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने के लिए मूर्तिमान होकर स्वयं विराजमान हैं। काशी में ~~यहाँ पर~~ (मुक्ति लाभ) यह कौन आश्चर्य की बात है, क्योंकि वह विश्वनाथ अखण्ड सच्चिदानन्द साक्षात् विश्वरूप हैं । इसी से त्रैलोक्य भी काशी के समान नहीं है और इसी से यह काशी सभी तीर्थों से श्रेष्ठ है ।

मंगलं सकलं वस्तु न किञ्चित हि विचारयेत् ।।

– ब्रह्मवैवर्तपुराण अ०

तथा सदा कृतयुगं चास्तु सदा चैवोत्तरायणम् ।
न ग्रहास्तोदयकृतो दोषो-विश्वेश्वरालये ।।

–काशीखण्ड अ० श्लोक

अर्थ- काशी के दर्शन-पूजन, यात्रा करने वालों को सभी काल, समय शुभ है और सभी वस्तु मंगल है। उत्तरायण और दक्षिरायण ग्रहों का उदय और तिथि, वार आदि का भी काशी में किंचित विचार नहीं करना चाहिए । तथा काशी में सत्ययुग (सत्ययुग) है ~~कृतयुग~~ और उत्तरायण है ~~और~~ ग्रहों के उदय व अस्त का भी दोष विश्वेश्वर आलय काशीपुरी में नहीं है। जब इच्छा हो तब काशी की दर्शन-पूजन-यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए ।

अनुसार ना धर्म । जिसके आ... श्लोक.

में जो जाति तत्पर रहती है, उन्हीं मनुष्य...

वास सफल होता है ।

कलावत्यन्त गोप्यानि भविष्यन्ति गिरीन्द्रजे ।
परं तेषां प्रभावोयः स स्वस्था नं न हास्यति ।।

-काशीखण्ड अ०

अर्थ-शंकर जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे पार्वती कलियुग में लिंग वह तीर्थ प्रायः लुप्त होंगे, उनका जो विशेष प्रभाव है वह अपने स्थान को नहीं छोड़ेगा, और अन्य शास्त्रों में भी कहा है कि "कलौस्थानानि पूज्यन्ते" अतएव लुप्त हुए मूर्ति व तीर्थ के स्थान का दर्शन करना चाहिए ।

काशीमुद्दिश्य यातानां सर्वः स्यात्समयः शुभः ।
मंगलं सकलं वस्तु न किञ्चित हि विचारयेत् ।।

- ब्रह्मवैवर्तपुराण अ०

तथा सदा कृतयुग चास्तु सदा देवोत्तरायणम् ।
न ग्रहास्तोदयकृतो दोषो-विश्वेश्वरालये ।।

-काशीखण्ड अ० श्लोक

अर्थ- काशी के दर्शन-पूजन, यात्रा करने वालों को सभी काल, समय शुभ है और सभी वस्तु मंगल है। उत्तरायण और दक्षिरायण ग्रहों का उदय और तिथि, वार आदि का भी काशी में किंचित विचार नहीं करना चाहिए । तथा काशी में सत्ययुग (सा ~~कृतयुग~~ है) ~~कृतयुग~~ और उत्तरायण है ~~और~~ ग्रहों के उदय व अस्त का भी दोष विश्वेश्वर आलय काशीपुरी में नहीं है। जब इच्छा हो तब काशी की दर्शन-पूजन-या[त्रा] प्रारम्भ करनी चाहिए ।

...अनुसार जो धर्म जिसके शा[स्त्र] ... श्लोक..
में जो जाति तत्पर रहती है, उन्हीं मनुष्[यों] ...
द्वारा सफल होता है ।

(72)

अर्थ- यह विचार कर बुद्धिमान मनुष्य को कभी भी काशी नहीं छोड़ना चाहिए, इस काशी की कृपा और प्रसाद से महादुर्लभ मुक्ति प्राप्त होती है ।

तीर्थार्थी न बहिर्गच्छेन् न देवार्थी कदाचन ।
सर्वतीर्थानि देवाश्च वसन्त्यत्राविमुक्तके ।।
अविमुक्तं समासाद्य न त्यजेन्मोक्षकामुक:

- ब्रह्मवैवर्त पुराणं, काशीरहस्य अ-

अर्थ- तीर्थ स्नान देवता के दर्शनार्थ यात्रा भी (मुक्ति) मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्य को काशी छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहिए । क्योंकि सम्पूर्ण तीर्थ काशी में आकर काशीवास करते हैं । सम्पूर्ण देवता काशी में आकर काशीवास करते हैं । अविमुक्त मुक्ति क्षेत्र में मुक्ति की कामना वाले मनुष्य को अविमुक्त मुक्ति क्षेत्र को प्राप्त कर काशी में वास करना चाहिए । काशी छोड़कर बाहर जाने की वासना को भी छोड़ देना चाहिए ।

स्वस्वजात्यनुसारेण यो धर्मो यस्य कीर्तित: ।
तत्तद्धर्मपरैरेव सेव्या वाराणसी पुरी ।।

- पद्मपुराण

अर्थ- अपने-अपने जाति के अनुसार जो धर्म जिसके शास्त्र में कहे गये हैं उस धर्म में जो जाति तत्पर रहती है, उन्हीं मनुष्यों को वाराणसी पुरी काशी में काशीवास सफल होता है ।

वाराणसी : करुणामयदिव्यमूर्तिरुत्सृज्य यत्र तु तनुं तनुभृत्तवेन ।
विश्वेश दृष्टमहिम यत्सहसा प्रविश्य रूपेणतां वितनुते शिवपदवीं दधाति ।।

- काशीखण्ड अ० 30/77 श्लोक 71

अर्थ- इस संसार में वाराणसी काशी साक्षात् करुणामई अलौकिक मूर्ति है क्योंकि जहां प्राणि मात्र सुखपूर्वक (मरते हैं) देह त्याग करते हैं, उसी समय विश्वनाथ जी के (तारक मंत्र के उपदेश से अज्ञान रूपी पाप का तत्काल नाश होकर) ज्ञान रूप ज्योति में प्रवेश करते ही केवल मोक्ष पद को प्राप्त करते हैं ।

येषां क्वापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसी गतिः ।

-काशीखण्ड अ० 32/74 श्लोक

अर्थ- जिन मनुष्यों की कहीं भी गति नहीं हो सकती उन मनुष्यों की गति वाराणसी काशी पुरी में ~~ही होगी~~ । होती है।

अविमुक्तगुणान्वक्तुं देव-दानव-मानवैः ।
न शक्यन्तेप्रमेयत्वात् स्वयं यत्र भवस्थितः ।

-मत्स्य पुराण

अर्थ- जिसमें स्वयं श्री विश्वेश्वर विश्वनाथ ही सदा सर्वदा निवास करते हैं, उस अविमुक्त मुक्ति क्षेत्र काशी के गुण देवता, दानव और मनुष्य नहीं कह सकते, कारण यह है कि काशी के गुण अप्रमेय गणनारहित हैं । अर्थात् माप रहित हैं ।

एवं ज्ञात्वा तु मेधावी नाविमुक्तं त्यजेन्नरः ।
अविमुक्तप्रसादेन विमुक्तो जायते यतः ।।

-काशीखण्ड अ० 77/25. श्लोक

दमो दान दया नित्यं ... ...गिः ।।

-काशीखण्ड, 65/~~64~~ श्लोक ६५.

अर्थ- मुक्ति चाहने वाले काशीवासियों को, नित्य ही उत्त... वाहिनी, गंगा में ... कर प्रयत्नपूर्वक शिव लिंग का दर्शन-पूजन करना चाहिए । विश्वनाथ जी ... आसपास रहने वाले भक्त नित्य मणिकर्णिकाघाट में स्नान कर विश्वनाथ ... दर्शन पूजन करने से मुक्ति हस्तामलक होती है, और अपने इन्द्रियों को ... रखकर यथा शक्ति प्रतिदिन दान देना, समस्त ~~जीवों~~, प्राणियों में ~~नित्य~~ करना चाहिये ~~जीवनपर्यन्त दया करना चाहिए ।~~

ये काश्यां धर्मभूमिष्ठा निवसन्ति मुनीश्वराः ।
ते तारयन्ति चात्मानं शतपूर्वान् शतावरान् ।।

- काशी मा0 8/2 श्लोक २

अर्थ- जो मननशील महात्मा जन स्वयं सत् धर्म का पालन करते हुए श्रोताओं को नि... सत्धर्म का उपदेश काशीखण्ड, काशीरहस्य, शिव रहस्य, शिवरहस्य लिंग पुराण ~~यह तीन पुस्तक का~~ ... काशी माहात्म्य काशी वासियों के प्राण है इनका नित्य श्रवण करना कराना चाहिए, शिव गी... महिम्न स्तोत्र शिव पुराण, लिंग पुराण आदि शिव सम्बन्धी रामायण, मद्भागवत, शिव गीता, श्री मद्भगवद्गीता , उपनिषद् आदि सद्ग्रन्थों सुनना, सुनाना चाहिए ।

जो वक्ता उपदेश की कथा सुनाते हुए काशी में निवास करते ~~काशी~~ में नित्य कथा करते हुए उपदेश देते हैं, उनके पूर्व के सौ (100) पीढ़ियों के पितृगण को साथ में लेकर इस सागर से तरते हैं, केवल ... करते हैं ।